नदी पार जाने वाले तीर्थयात्री

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

वह व्यक्ति नदी के किनारे खड़ा, नीले-स्लेटी पानी को सन्देह की दृष्टि से देख रहा था। उसकी नज़र कुछ क़दम दूर, टूटी-फूटी कश्तियों पर पड़ी। पीछे से किसी के गहरी साँस लेने की आवाज़ आई तो उसे पता चला कि उसके साथी भी वहाँ पहुँच गए हैं और अब वे सभी, दस के दस लोग एकत्र होकर नदी के किनारे पर खड़े, नदी के फैलाव को देख रहे थे।

नदी चौड़ी तो थी, पर इतनी भी चौड़ी नहीं कि उन्हें दूसरा किनारा दिखाई ही न दे। वह व्यक्ति जो उस समूह के मुखिया के रूप में कार्य कर रहा था, उसने अपनी जेब से एक पीतल का कम्पास यानी दिशा दिखाने वाला यन्त्र निकाला और साथ ही एक पुराना-सा दिखने वाला नक़्शा भी निकाला जिसे उसने साफ़ाई से चौकोर मोड़कर रखा हुआ था। उसने नक़्शे को खोला, अपनी भौंहें सिकोड़ीं और फिर नक़्शे को वापस जेब में डाल लिया। उसने कहा, “देखो, हमें नदी पार करके दूसरी ओर जाना होगा। वहाँ से आगे हम पैदल जाएँगे।”

वे भारत में एक तीर्थयात्रा पर थे, कई पवित्र तीर्थस्थानों और ख़ूबसूरत जगहों से होकर गुज़र रहे थे। उन्होंने अपनी अधिकतर यात्रा पैदल ही तय की थी, परन्तु कभी-कभी उन्होंने यातायात के अन्य साधनों का भी उपयोग किया था जैसे कि अभी वे इन नावों के माध्यम से नदी पार करने वाले थे।

वह व्यक्ति नावों की ओर चल पड़ा और अपने समूह को पीछे आने का इशारा करते हुए कहने लगा, “चलो, चलो, हम उन छोटी कश्तियों का इस्तेमाल करेंगे।” जल्द ही वे सब अपनी-अपनी कश्तियों पर सवार होकर नदी में उतर गए।

नदी पार करने की यात्रा मुश्किल सिद्ध हुई। पानी का प्रवाह कहीं-कहीं बहुत तेज़ था और सबको चप्पू चलाना और नाव को दिशा देना तो आता नहीं था। कई जगहों पर वे बाल-बाल बचे, उनकी कश्तियों में ढेर सारा पानी भी भर गया। हालाँकि जब वे लोग नदी में उतरे तब उनकी कश्तियाँ आस-पास ही थीं परन्तु जल्द ही वे अलग-थलग हो गईं, जिसका परिणाम यह होने वाला था कि वे सब अलग-अलग समय पर व अलग-अलग स्थानों पर दूसरे किनारे पर पहुँचेंगे।

और ऐसा ही हुआ। वे सभी दूसरे तट पर *पहुँच तो गए,* पर वहाँ पहुँचकर बिखर गए। वे गिरते-पड़ते, किसी तरह कश्तियों से बाहर निकले, थकान से चूर, हाँफते हुए, उनके गीले कपड़े शरीर से चिपके हुए थे। जब उन्होंने एक-दूसरे को देखा तो वे धीरे-धीरे एक जगह इकट्ठा होने लगे।

जब वे सभी फिर से इकट्ठा हो गए तो उनके मुखिया ने सुझाव दिया कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी लोग इस किनारे पर आ गए हैं, उन्हें एक बार गिनती कर लेनी चाहिए। उसने अपने पास खड़े व्यक्ति की ओर इशारा किया और कहा, "एक।"

फिर उसने, उस व्यक्ति के पास खड़ी महिला को देखा। "दो।" और फिर उस महिला के पास खड़ी महिला को। "तीन।"

इसी तरह वह गिनती करता रहा जब तक कि वह समूह के अन्त तक नहीं पहुँच गया। "सात, आठ, नौ . . . ।"

वह रुका। बाक़ी के लोगों ने उसकी ओर देखा।

"नौ?" उसने दोहराया, उसके चेहरे पर उलझन साफ़ नज़र आ रही थी। "लेकिन जब हम उस किनारे से चले थे तब तो हम दस थे। अब केवल नौ कैसे हो सकते हैं?"

बाक़ी सभी लोग सुनसान पड़े नदी के तट को देखने लगे मानो अपने समूह के दसवें व्यक्ति के रेत से बाहर आने की उम्मीद कर रहे हों।

और फिर किसी ने डरे हुए स्वर में कहा, "क्-क्या हमनें नदी में किसी को खो तो नहीं दिया?"

"चुप रहो," समूह के एक अन्य सदस्य ने कहा जो छोटे-छोटे बालों वाली एक महिला थी। "हमसे ज़रूर कोई ग़लती हो रही है, मुझे गिनने दो। एक। दो। तीन। चार। पाँच। छः। सात . . . आठ . . . नौ?"

गिनती ख़त्म करते-करते उसकी आवाज़ काँपने लगी। "ऐसा कैसे हो सकता है?" उसने उलझन भरे स्वर में कहा।

इस तरह, एक-एक करके सबने गिना कि समूह में कितने लोग हैं। परन्तु बार-बार गिनने पर भी नौ ही लोग निकले। और हर नई व असफल गिनती के साथ वे और भी अधिक भयभीत और अधिक निराश होते गए।

इसी बीच एक और कश्ती किनारे पर आकर रुकी। वे तीर्थयात्री अपनी परेशानी में इतने उलझे हुए थे कि उस ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया। उन्होंने नहीं देखा, उस युवा महिला को जो फुर्ती से नाव से बाहर आई या फिर उस बच्चे को जिसे उस महिला ने अपने बाद कश्ती से बाहर निकाला।

वह महिला और बच्चा, हाथ में अपना सामान लिए, उनके सामने आकर उस पूरे दृश्य को ग़ौर से देखने लगे— देखा कि यहाँ पर लोगों का एक समूह पागलों की तरह एक-दूसरे की तरफ़ इशारे कर रहा था, उनकी आवाज़ में बेचैनी थी और वे बार-बार एक से नौ तक ही गिन रहे थे।

बच्चे ने बड़ी उत्सुक्ता से अपनी माँ से पूछा। "माँ, वे लोग क्या कर रहे हैं?"

"मुझे नहीं पता," उस महिला ने धीरे-से कहा। "क्या हम जाकर पूछें यदि उन्हें मदद की ज़रूरत हो तो?"

बच्चे ने हाँ में सिर हिलाया। माँ ने बच्चे का हाथ पकड़ा और उस समूह के नज़दीक गई।

"माँफ़ कीजिए," उस युवा महिला ने विनम्रता से कहा, "पर क्या ऐसा कुछ है जो आपको परेशान कर रहा है?"

उस समूह का मुखिया उस महिला की ओर मुड़ा। उस व्यक्ति के चेहरे पर चिन्ता की लकीरें साफ़ दिखाई दे रही थीं।

उसने उस युवा महिला से कहा, "बहन, मैं इस बात की सराहना करता हूँ कि आप हमारी मदद करना चाहती हैं लेकिन मुझे डर है कि हमारे समूह के लिए एक बहुत बुरी ख़बर है। हम दस लोग थे जिन्होंने यह तीर्थयात्रा शुरू की थी, और—और अब आप देख ही रही हैं . . ." वह व्यक्ति अपनी पूरी बात ख़त्म नहीं कर पाया और अपने साथियों की तरफ़ इशारा करने लगा।

यह देखकर उस बच्चे ने अचानक कहा। "मैं करूँ क्या? मैं गिनती करके देखूँ क्या? मुझे दस तक की गिनती आती है!"

साफ़ ज़ाहिर था कि वह व्यक्ति इससे असहमत था परन्तु ऐसा लगा कि वह उस बच्चे के उत्साह को कम नहीं करना चाहता था। उसने धीरे-से अपना सिर हिलाते हुए सहमती दी।

उस बच्चे की आँखों में चमक आ गई और उसने गिनती शुरू की : “एक . . . दो . . . तीन . . .” उसने हर संख्या को ध्यानपूर्वक, नपे-तुले स्वर में, एकाग्रता के साथ गिनना शुरू किया और गिनते-गिनते उसकी आँखें एक से दूसरे व्यक्ति की ओर जा रही थीं।

“आठ . . . नौ . . . दस!” उसने उत्साहपूर्वक समाप्त किया।

उस समूह के हर व्यक्ति ने उस बच्चे को आश्चर्य से देखा।

“ऐसा कैसे हो सकता है?” मुखिया ने उस बच्चे की माँ की ओर मुड़ते हुए कहा। “ऐसा कैसे हुआ कि इस छोटे-से बच्चे ने हमें दस बताया, जबकि हम सब ने केवल नौ ही गिने थे?”

माँ मुस्कुराई और उसने विनम्रता से कहा, “भैया, मुझे लगता है कि आप सबने गिनती करते समय खुद को नहीं गिना।”

यह कहानी भारत के वेदान्तदर्शन के ग्रन्थों में कथित एक पौराणिक कथा से प्रेरित है।

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।